[illegible] – प्राचीन

क्र. १२३

याज्ञिक

पद्धति

॥ केश्वरी अनुष्ठानपद्धति

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(1)

Gopal Row Harry Deshmork

28th December 1886

Ahmedabad

सितेसरिते संगपेयत्र कृताभिषेक मुत्पतंति
विस्मतं निधीरा

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(2)

Gopalrao Hurry
Deshmukh

28th December 1886
Ahmedabad

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(3)

ॐ तत् सत् परमात्मनेनमः

एकमेवाद्वितीयंब्रह्म

सत्यमेव जयते ॥ धर्ममेव जयते.

एकेश्वरी अनुष्ठान पद्धति.

संस्कृत भाषामां प्रगट करनार,

अमदावादनी प्रार्थना समाज.

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

अमदावादमां युनाइटेड प्रिंटिंग अने जनरल एजन्सी कंपनी
"लिमिटेड" ना प्रेसमां रणछोडलाल गंगारामे छापी.

कीं० ५ आना.

संवत १९३०   सन १८७४

एकेश्वरी अनुष्टान पद्धतीनु प्रयोजन.

वेद उपनिषद शास्त्र पुराणथी एवो सार नीकळे छे के इश्वर एक छे अने एनी अनन्य ने अव्य विचारणी भक्ति करवी पण ए सिद्धांतनो आदर संन्यासी अने साधु वीगेरे त्यागी मात्र करेछे पण गृहस्थ लोक एकेश्वरी मतना होय तो ते मत प्रमाणे उपर लखेला सिद्धांतनो आदर करवानी रुढी नथी ने ग्रहस्थनुं कर्म वेद अने सूत्रने स्मृती प्रमाणे करवानी रुढी छे केटलाएक आचार न चाले एवा छे ते करता नथी जेमके प्रत्येक गृहस्थे स्मार्ताग्नीनी उपासना नीत्य करवी जोइए ते कोइ करता नथी एने विशे नीषेध एवो लखेलो छे के बार दाहाडा सुधी जे गृहस्थ निरग्नी रहे छे ते शुद्रवत थशे. तेज प्रमाणे प्रत्येक ग्रहस्थे सायंप्रातःसंध्या करवी जोइए ते त्रण दिवस न करे तो ते पण शुद्र थाय छे ने तेज प्रमाणे प्रत्येक ब्राह्मणे बार वर्ष सुधी ब्रह्मचर्य राखीने वेदनी एक शाखा पण भणवी जोइए जे ए प्रमाणे न करे ते पण शुद्र थाय छे हवे हाल ए नित्य कर्ममांथी बार दहाडा ने त्रण दहाडा तो शुं पण त्रण त्रण पेहेडी जोइए तोपण एमांथी एकें कर्म थतुं नथी सूत्रनां केटलांएक कर्म वर्जित थयां छे केटलांएक कळियुगना कारणथी काढी नांख्यां छे ने केटलांएक रह्यां छे ते नाटक जेवा ब्राह्मण केहेवरावाने वास्ते करे छे. जेमके उपनयनोत्तर चार वेद व्रत करवानुं लख्युं छे तेनो लोप थइ गयो छे मुळ ब्रह्मचर्यनुंज ठेकाणुं नथी तो वेदव्रतने वेदाध्यायन शेनुं करे, समावर्तन करीने स्नात-

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai

क थइने बीजे दिवशे परणवाने तैयार थाय छे. ब्राह्मणोमां बे भाग थएला छे तेमांना एक भागने ग्रहस्थ केहे छे अने बीजाने वेदीआ कहेछे. ग्रहस्थ जे होयछे ते तो वेदाध्यायन के ब्रह्मचर्य विगेरे जे पोतानो धर्म छे ते पोते कबुलज करता नथी ए प्रमाणे व्यवस्था थइ गइ छे.

सदरहु कारणथी घणाएक ग्रंथकारोनो मत एवो छे के कळियुगमां परमेश्वरनु भजन कीर्तन करवुं एटलोज धर्म रहेलो छे ने कर्मकांड करवानी जरुर नथी कारण आ युगमां कोइ पण कर्म अछिद्र थवानुं नथी कारण देश काळ अनकुळ नथी माटे कर्मकांड छे ते व्यर्थ छे एवुं ऊपनीषदथी बोलता आव्याछे ए कर्मनी नोंदा थवानु कारण के कर्मने अंगे अनेक देवता आवे छे एक इश्वर छे ए निश्चय कर्मकांडमां नथी ज्ञानकांडमां ए निश्चय छे माटे बधा कर्मने अंते ज्ञानकांडने मेळववा सारु तत्सत् ब्रह्मार्पण मस्तु एम बोलाय छे. हवे जे वैष्णव छे ते कृष्णार्पण मस्तु, स्मार्तवाळा शीवार्पण मस्तु एम कहे छे. अने अनन्य भक्तिनुं संरक्षण करेछे.

कर्मकांडमां जे अनेक देव आवेछे अने जेनी पुजा अने स्तोत्र करवा पडेछे तेनां नाम.

देववर्ग.

उमामहेश्वर, सचीपुरंदर, लक्ष्मीनारायण, रुद्रपुरोग, विष्णुपुरोग, ब्रह्मपुरोग, गौर्यादीशोडशमात्रीका, ब्राह्मयादीसप्तमात्रिका, नवग्रह, गणपती, क्षेत्रपाळ, यम, अग्नि, वायु, प्रजापती, नक्षत्र आकाश, धाता, कुबेर, आश्विन, त्वष्टा, नैऋति, ग्रामदेव, कुळदेव, इष्टदेव, दीक्पाळ, वसु, भुवनेश्वरी,कात्यायनी,

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

मेधा, श्रद्धा, सरस्वती, द्यावापृथिवी, धन्वंतरी, वास्तु, पुरूरवार्द्रव, धुरीलोचन, धनुर्धर, काळकाम, सत्यवसु.

मनुष्यवर्ग.

सप्तऋषी, अरुंधती, ब्राह्मण, पीतर.

पशुवर्ग.

सर्प, सुरभी, अनंत, कूर्म, वराह, नंदी, गरुड, हनुमान, मुषक, व्याघ्र.

वृक्षवर्ग.

तुलसी, बील्व, दुर्वा, शमी, नीरगुंडी, अश्वथ, शतपत्रीका, कदम, दर्भ.

शब्दवर्ग.

वेद, गायत्री, पुराण, पुस्तक, पत्रिका, टिपणु, मंत्र, प्रणव, बीज.

नदीवर्ग.

गंगा, यमुना, रेवा, कृष्णा, भागीरथी, नर्मदा. सरस्वति.

काळवर्ग.

षष्टिपुजन, व्यतीपात, एकादशी.

यंत्रवर्ग.

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

घटिका, मंगलयंत्र, कुंडलि.

अवयव.

लिंग, विष्णुपद, योनि.

जे गृहस्थ अनेक देवनी पुजा करवी ए ठीक नथी धारता तेमने लागु पडे एवी पद्धती रचवानुं प्रयत्न कोइए करेलु एम जणातु नथी अने प्राचीनकाळथी जे पद्धती चालती आवीछे तेमां केटलाएक वीषय क्रूरतानाने बीभीत्स आवेछे, जेमके यज्ञ यागादी करीए तो पशु हिंसा आवेछे, साधारण हवन करीए तो कुंड उपर योनी करवी पडेछे. अने नीगम ने आगम कर्म मार्गमां भेगा थयाछे. केटलाएक कर्ममां भुत, प्रेत, पीशाचना नामथी बळी करवी पडेछे, सुत्रमां जे कर्म नथी ते रुढीमां छे ने सुत्रमां छे ते रुढीमां नथी. केटलाएक एम कहे छे के अनेक देवने आपणे पुजीए पण ए सर्वे एकज रुपछें एम समजीए पण ए वात कोइने ठीक लागशे नें कोइने नहीं लागे सर्वेश्वर मत, अनेकेश्वरमत, अने एकेश्वरमत ए त्रणे मत वेदमांथी नीकळ्या छे. सर्वेश्वर मतथी वेदांत शास्त्र थयुं, अनेकेश्वरमतथी कर्मकांड थयुं ने एकेश्वरमतथी भक्तीमार्ग थयो. एकेश्वरमां भक्ती मार्ग थयो पण भक्ती मार्गमां अनेक देवना उपासीक थया जेमके कोइ शीवना, कोइ वीष्णुना, कोइ देवीना, ने कोइ भैरवना; ने ते ते देवने मानीने अनन्य भक्तीथी चालेछे ने कहेछे के आ देव छे ते खराछे ने बीजाने मानवा नही. पोत पोताना इष्ट देवने विशे निगृह करेछे. पण ए नीगृहमां अनेक तकरारो उत्पन्न थइ ने धर्म-

" Joint Project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

नो अभिमान उत्पन्न थयो अनें वस्तुता:भेद न छतां कल्पित भेद इश्वर विशे बहु उत्पन्न थया ए कल्पित भेदनी जाळमां पडवामां जेनी इछा नही तेणे उपासना शी रीते करवी अने तेने कर्मकांड शी रीते चलाववुं ए विचार करीने एकेश्वरी अनुष्टान पद्धती रचेली छे.

अतिशे कर्मकांड करवु ए पण मुर्खता छे, ने केवळ कर्मकांडनो त्याग करवो ते पण अमांगल्य छे, ने शरीर शुध्यर्थ के रक्षणार्थ कर्म करतां दोष नथी, कर्मथी मोक्ष नथी एतो सिद्धांतजछे. कर्म कर्तां सुख दुख भोगववु पडेछे पण ते हमेशां कांइ तेम नथी केटलाक दीवश भोगवीने पाछा मृत्यु लोकमां पडेछे एमज केहेवायछे माटे सर्वथी श्रेष्टछे ते ज्ञानजछे, अने ज्ञानथी श्रेष्ट भक्तिछे, अने ते भक्तीथी निति, न्याय, भुतदया, क्षमा, सत्य इत्यादी परमेश्वरना गुणछे ते उपर नीष्टा राखेतो भक्तना पण ए गुण जाय नही.

केटलाएक प्राचिन आचार नरमेध, गोमेध, अनस्तरणी, नियोग, शूलगव, दियरवटु, द्वादशपुत्र, पलपैतृक, महाव्रत, मधुपर्क इत्यादि अनुष्टानो बंध थयां छे तो पण ते अनुष्ठानना मंत्र पठण अने पारायण करवामां लोक पुण्य समजे छे. मूळ विधि न थाय तो तेनो प्रत्याम्नाय करे छे. बाळवामां मांसना पिंडने ठेकाणे लोटनो पिंड करे छे. त्यारे जे कर्म करवुं नहीं ते कर्मनी कथा अने मंत्र वांचवामां अने तेनो प्रयोग करवामां पुण्य छे के नहीं ए विषे घणो संशय छे. अने यज्ञमां पशु बहुज क्रुरपणाथी मारवां अने तेना मांसनो होम करवो, अने भक्षण करवुं ए केटलाएक लोकोने गमतुं नथी. तेज प्रमाणे

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

7

गोमुत्र, छांण, दुध, अने घी, एकत्र मेळवीने पीतां, देह शुद्ध थाय छे ए पण समजवाने मुशकेल छे. तेज प्रमाणे तांत्रीकमत अति विपरीत छे, ते छानी रीते काशी इत्यादि शेहेरोमां बहु चाले छे अने शीवनी पूजाओ लिंग रूपे थाय छे ते वात वैष्णव लोको मान्य करता नथी, अने लिंगनुं दर्शन के तीर्थ प्रसाद लेता नथी, काशीए जाय तो विश्वेश्वरनुं दर्शन करता नथी अने हींगळाज माता छे त्यां गोसांइ लोक दर्शन करवा जाय छे पण चारे संप्रदायना वैष्णव लोको जता नथी, तेनुं कारण एम बतावे छे के ए माताआगळ हींसा थाय छे माटे अमे दर्शन करता नथी एम केहे छे. सेहेजानंदस्वामीए शीक्षापत्रीमां, एम लख्युं छे के जे देवने मद्यमांसनुं निवेदन थाय छे, ते देवनुं दर्शन सत्संगीए करवुं नहीं. पौष्टीक मार्गवाळा मरजादी अने समर्पणी ए अनन्य भक्ति करे छे. अने शिवलिंगनो तीर्थ प्रसाद लेता नथी, मध्वसंप्रदाइ छे ते शीवनी मूर्ति होय तो दर्शन करे छे, अने लिंग अपूज्य गणे छे. तेज प्रमाणे चंडीपाठमां मद्यमांसनुं प्रतिपादन कर्युं छे, तो पण तेनो पाठ हवन चाले छे. ते पण वैष्णव लोको मान्य करता नथी. पशुने ठेकाणे कोळुं अने पीष्ट पशु नारीएळ कापे छे, अने मंत्र जनावरनो भणे छे, तिंगलेरामानुज विधवानुं वपन करता नथी. गुजराती मारवाडी ब्राह्मण यज्ञ करता नथी. आ प्रमाणे केटलीएक सुधारणा थती आवी छे अने केटलीएक थवानी छे ते उपर आज लोको लक्ष देवा लाग्या छे. कामाक्षीदेवी ए योनी भाग छे एम कहेवाय छे.

पुराणमां एवी कथा छे के दक्ष प्रजापतिए पार्वती बळी मुआं त्यारे तेना ककडा करीने पृथ्वी

उपर फेंकी दीधा ते कोइ ठेकाणे हाथ, कोइ ठेकाणे पग, कोइ ठेकाणे मुख, कोइ ठेकाणे नाभी पड्यार्था ते ते ठेकाणे उग्रपीठ थयुं, तेमां कामाक्षी, मिनाक्षी, मातापुर, तुळजापुर, कलकत्ता, विंध्यावासीनी इत्यादि उग्रपीठ गणायछे. जेवां शिवनां ज्योतिर्लिंग तेवां ए देवीनां पीठ गणाय छे. पण ए बधायमां मद्य मांस खपे तेथी वैष्णव लोको त्यां जता नथी. सन्याशी गोसांइ, कानफटा, नाथपंथी, वाममार्गी, कौलीक, अघोरी एमनां ए मोटां धाम छे.

एवी एवी अनेक तकरारो आ भरतखंडमां उत्पंन थइ छे. शाखा परत्वे कर्माअनुष्टान जुदु जुदु छे. कृष्णयजुर्वेद ने शुक्लयजुर्वेद ए बेनेनी लढाइ छे. एक कहेछे के अमे मोहोटा, बीजो कहे छे के अमे मोहोटा, एवी एवी परचुरण तकरारो गणतां पार आवे नहीं. एटलुं खरू के ए बधी तकरारो अभीमानमूलक निष्कारण अने नीष्फळ छे. आ जे पद्धति बांधी छे तेमां कांइ सुधारो करवो कोइना ध्यानमां आवशे तो लखी जणाववुं के आ ग्रंथनी पुनरावृत्ति ज्यारे करीशुं त्यारे ते प्रमाणे फेरफार करीशुं.

वेद शाखाना भेद प्रमाणे पद्धति जुदि जुदि होय छे. सन्याशी, गोसांइनी पद्धति जुदि, वैरागीनी कर्म पद्धति जुदि, वैष्णवनी जुदि, वाममार्गीनी जुदि छे त्यारे एकेश्वरी मतनी एक पद्धति अवश्य जोइए माटे आ प्रयत्न छे. विद्वानोनि अनुमति मळशे ते प्रमाणे सुधारो करवामां आवशे.

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

प्रमाण वचनो.

ॐ ब्रह्म वादिनो वदंति । यतो वाइमानि भूतानि जायंते । येन जातानि जीवंति। यत्प्रयंत्यभिसं विशंति । तद्विजिज्ञासस्व । तद्ब्रह्मेति ॥ भृगुवल्लि. उपनिःषद

ॐ ब्रह्मविदाप्नोतिपरं । सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म । ब्रह्मवल्लि. उ.

ॐ ब्रह्मविदोवदंति । पराचैवापराच । तत्रापराऋग्वेदो यजुर्वेदःसामवेदो ब्रह्म-वेदःशिक्षाकल्पोव्याकरणंनिरुक्तंछंदोज्योतिष मितिहासपुराणन्यायोमीमांसाधर्मशास्त्राणित्यथपरायद्यातदक्षरमधिगम्यते. मुंडक. उ०

ॐ अविद्यायामंतरेवर्तमानाः स्वयंधीराः पंडितंमन्यमानाः । अविद्यायांबहुधावर्तमानावयंकृतार्थाइत्यभिमन्यंतिबालाः । यत्कर्मिणोनप्रवेदयंतिरागात्तेनातुराक्षीणलोकाश्च्यवंते । इष्टापूर्तंमन्यमानावरिष्टंनान्यच्छ्रेयोवेदयंतेप्रमूढाः । मुंडक. उ०

ॐ येनाक्षरंपुरुषंवेदसत्यंप्रोवाचतांतत्वतोब्रह्मविद्यांतदेतत्सत्यं । मुंडक. उ०

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

ॐ एकंसद्विप्राबहुधावदंतित्याग्नियमंमातरिश्वानमाहुः ॥ ऋग्वेदसंहिता

सन्यासःकर्मयोगश्चनिश्रेयसकराउभौ गीता ५-२

शारीरंकेवलकर्मकुर्वन्नाप्नोनिकिल्बिषं ॥ ४-२१

शरीरयात्रापिचतेनप्रसिध्येदकर्मणः ३-८

काम्यानांकर्मणांन्यासंसन्यासंकवयोविदुः ॥ १८-२

नेहाभिक्रमनाशोस्तिप्रत्यवायोनविद्यते २-४०

पुरुषःसपरःपार्थभक्त्यालभ्यस्त्वनंन्यया ८-२२

कलौतद्धरिकीर्तनं भागवत.

संध्यात्रिक्रमणंयस्यसप्तरात्रमविच्युतंउन्मतदोषयुक्तोवापुनःसंस्कारमर्हति ॥

शौनकस्मृति.

संध्यायेननविज्ञातासंध्यायेनानुपासित ॥ जीवमानांभवेच्छूद्रांमृतःश्वानोभवि-

Joint project of Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

९

ष्यति ॥ गोभिल.

सायंप्रातः सदासंध्यायेविप्रानउपासते॥तानेवधार्मिकोराजाशूद्रकर्मसूयो-
जयेत् ॥ गोभिल.

ॐ ॥ अंभस्यपारेभुवनस्यमध्येनाकस्यपृष्टेमहतोमहीयान् ॥ शुक्रेणज्योतीꣳषिस-
मनुप्रविष्टःप्रजापतिश्चरतिगर्भेअंतः। यस्मिन्निदꣳसंचविचैतिसर्वंयस्मिंदेवाअधिवि-
श्वेनिषेदुः। तदेवभूतंतदुभव्यमाइदंतदक्षरेपरमेव्योमन् ॥ येनावृतंखंचदिवंमहीं-
चयेनादित्यस्तपतितेजसाभ्राजसाच। यमंतःसमुद्रेकवयोवयंतियदक्षरेपरमेप्रजाः।
यतःप्रसूताजगतःप्रसूतीतोयेनजीवान्व्यचसर्ज्जभूम्यां। यदोषधीभिःपुरुषान्पशूꣳ
श्चविवेशभूतानिचराचराणि। अतःपरंनान्यदणीयसꣳहियरात्परंयन्महतोमहांतं।
यदेकमव्यक्तमनंतरूपंविश्वंपुराणंतमसःपरस्तात् ॥ १ ॥ तदेवर्त्तंतदुसत्यमाहुस्त-
देवब्रह्मपरमंकविनां। इष्टापूर्त्तंवहुधाजातंजायमानंविश्वंबिभर्त्तिभुवनस्यनाभिः। त-

देवाग्निस्तद्वायुस्तत्सूर्यस्तदु चंद्रमाः । तदेवशुक्रममृतंतद्ब्रह्मतदापःसप्रजापतिः । सर्वे
निमेषाजज्ञिरेविद्युतः पुरुषादधि । कलामुव्हर्ताःकाष्टाश्चाहोरात्राश्चसर्वशः । अर्द्ध-
मासामासाऋतवः सवत्सरश्चकल्पंतां । सआपःप्रदुघेउभेइमेअंतरीक्षमथोसुवः ॥
नैनमूर्ध्वंनतिर्यंचनमध्येपरिजग्रभत् । नतस्येशेकश्चनतस्यनाममहद्यशः ॥ २ ॥ न-
संदशेतिष्ठतिरूपमस्यनचक्षुषापश्यतिकश्चनैनं । हृदामनीषामनसाभिक्लृप्तोयएनंविदु-
रमृतास्तेभवंति । अद्भ्यःसंभूतोहिरण्यगर्भइत्यष्टौ । एषहिदेवःप्रदिशोनुसर्वाःपूर्वो
हिजातःसउगर्भेअंतः । सविजायमानःसजनिष्यमाणःप्रत्यङ्मुखास्तिष्ठतीविश्वतोमु-
खः । विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखोविश्वतोहस्तउतविश्वतस्यात् । संबाहुभ्यांनमति
संपतत्रैर्द्यावापृथिवीजनयंदेवएकः । वेनस्तत्पश्यन्विश्वाभुवनानिविद्वान्यत्रविश्वंभवत्ये-
कनीलं । यस्मिन्निद॰ संचविचैक॰सओतःप्रोतश्चविभुप्रजासु । प्रतद्वोचेअमृतन्नु-
विद्वान्गंधर्वोनामानिहितंगुहासु ॥ ३ ॥ त्रीणिपदानिहितागुहासुयस्तद्वेदसवितुःपिता-
सत् । सनोबंधुर्जनितासविधाताधामानिवेदभुवनानिविश्वा । यत्रदेवाअमृतमानशाना

" Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

स्तृतीयेधामान्यभ्यैरयंत । परिद्यावापृथिवीयंतिसद्यःपरिलोकान्परिदिशःपरिसुवः।
ऋतस्यतंतुविततंविचृत्यतदपश्यत्तदभवत्प्रजासु । परीत्यलोकान्परीत्यभुतानिपरी-
त्यसर्वाःप्रदिशोदिशश्च ॥ ॥ तैतीर्य उपनिषद् नारायण ।।

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

अनुक्रमणिका.

१ अथ सर्व कर्म साधारण ब्रह्मोपासना पद्धति.......... १
२ अथ जात कर्म.......... २
३ अथ नाम करणं.......... ४
४ अथ चूडा करणं.......... ५
५ अथ उपनयनं.......... ६
६ अथ समावर्तनं.......... ७
७ अथ दिक्षा.......... ८
८ अथ विवाह.......... १२
९ अथ उदिच्यं कर्म.......... १५
१० अन्त्येष्टि कर्म.......... १६
११ अथ श्राद्धीय साधारण कर्म.......... १६
१२ अथ पितृ श्राद्धं.......... १७
१३ अथ पितुरग्रय श्राद्धे पुत्रैः प्रार्थनीयं.......... १९

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

11

१४ अथ पितुश्चतुर्थ्यां क्रियायां दुहितृभिः प्रार्थनं २०

१५ अथ पितुर्वार्षिक श्राद्धे पुत्रैः प्रार्थनं २०

१६ अथ मातुः श्राद्ध वासरे व्याख्यानं २१

१७ अथ मातुराद्य श्राद्धे पुत्रैः प्रार्थनं यथा २२

१८ अथ मातुः श्चतुर्थ क्रियाया कन्याभिः प्रार्थनीयं २३

१९ अथ मातुर्वार्षिक श्राद्धे कृत्ये पुत्राणां प्रार्थमं २३

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

श्री परमात्मने नमः ॥ वेदोपनि षद्शास्त्रेभ्य एवंज्ञायते इश्वर एक एवतस्या नन्यभावेन अव्यभिचारिणी भक्तिः कर्त्तव्या तदेव सिद्धांतोऽस्ति परंतु तस्यादरं संन्यासिन एव कुर्वंति नतुग्रहस्थाःग्रहस्थेष्वपि एकेश्वरमतमानिनः पुरुषाः पूर्वोक्त सिद्धांतस्यादरं कुर्वंति अपिच तद्व्यवस्थानास्ति ॥ यथा ॥ ग्रहस्थैर्वेद सूत्रोक्तंकर्मसदाकार्यं ॥ तदुक्त धर्माःकेचिन्निश्चयेन कर्तव्याः॥ तान्नैव कुर्वंतिते के धर्माः ॥यथा ॥ सर्वग्रहस्थैः स्मार्त्ताग्निर्नित्यमुपास्यः ॥ तथासायंप्रातःसंध्यापि उपास्या ॥ तदनुपासने महान्निषेधोवर्त्तते ॥ योब्राह्मणः द्वादश दिनावधि निरग्निस्तिष्टाति सतुशुद्रवद्भवति ॥ तथाच ॥ योब्राह्मण स्त्रिदिनंसंध्यांनोपासते ॥ सोऽपिशुद्रतुल्योभवत्येव ॥ तदुक्तम् ॥ संध्यायेन नविज्ञाता संध्यायेनानुपासिता ॥ जीवमानोभवेच्छूद्रोमृतः श्वानोभविष्यति ॥ इतिगोभिलोक्तेः ॥ तथैव ॥ द्विजैर्द्वादशवर्षावधि ब्रह्मचर्यव्रतं पालनीयं ॥ तत्रस्वैवेदस्य यद्वा स्ववेदोक्तैकशाखाया अप्यध्ययनंकार्यं ॥ योब्राह्मणो नकुरुतेसोपिशुद्रवद्भवति ॥ एतादृशाः ग्रहस्थधर्माः संति॥ अद्यतुत्रिपुरुषावधितद्धर्मो नैवदृश्यतेतुत्रिदिनंकुतएव॥ सूत्रस्यकातिचित् कर्माणि नष्टानि ॥ कतिचित् कलियुगत्वात् वर्जितानि ॥ तन्मध्येयानि अवशोषितानितानि नाटकतुल्यरूपंकथयितुंब्राह्मणाः धारयंति ॥ किमिति ॥ उपनयनोत्तरं ब्रह्मचर्यपूर्वकंवेदाध्ययनमेवकार्यंनान्यत् ॥अस्मिन्नूकालेतु ब्रह्मचर्यव्रतं नास्तितुवेदायनंकुतएव ॥ ग्रहितो पवितः सन्तत्क्षणमेवपाणिग्रहणंकर्त्तुंयाति ॥ ब्राह्मणानां द्वौभागौवर्त्तेते ॥ तद्यथा ॥ ग्रहस्थः शुक्लश्च ॥ तत्रशुक्लस्तुयथावकाशेनाकिंचिदपि स्वधर्माचरणंकरोति ॥ ग्रहस्थस्तुब्रह्मचर्यवेदाध्ययनादि स्वधर्मोस्ति एवंन प्रमाणंकरोति ॥एतादृशी व्यवस्था समुत्पन्ना अतःका-

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

12

रणात्कलौ परमेश्वरस्य स्मरण किर्तनादिकं करणीयं ॥ सएव परमोधर्मः ॥ बहुतरग्रंथेषु एतत्प्रमाणभूतं-भवति ॥ कलौ केशव किर्त्तनमित्यादि ॥ एवंकृतकर्मकांडस्यप्रयोजनंनास्ति ॥ कुतःकलौयुगेकर्म छिद्रमंतरा पूर्णंनभवेत् देशकालाननुकूलत्वात् ॥ कर्मकांडस्य निर्बलतास्ति ॥ तथाचोपनिषद्शास्त्रेभ्यः ज्ञानकांडस्य प्रबलतावर्तते ॥ ज्ञानकांडे परमेश्वर एकएवनिश्चितः ॥ एतन्निश्चयो कर्मकांडेनास्ति ॥ तथा कर्मकांडेऽनेकदेवानांपूजनमस्ति ॥ ततःज्ञान कांडैक्यतांप्राप्तुं कर्मण, अंते कर्मिण, वदंति किं, तत्सत्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ वैष्णव,स्तुकृष्णार्पणमस्तु ॥ स्मार्त्ताः शिवार्पणमस्तु एवंरित्या वदंति ॥ ततः ज्ञानकांडः श्रेष्ठः॥ कर्मकांडेऽनेकदेवापूजनीयास्तेके ॥

देववर्गः॥ उमामहेश्वर ॥ शचीपुरंदर ॥ लक्ष्मीनारायण रुद्रपुरोग ॥ विष्णुपुरोग ॥ ब्रह्मपुरोग ॥ गौर्यादिषोडशमात्रिका ॥ ब्रह्मण्यादिसप्तमात्रिका ॥ नवग्रहाः गणपतिः ॥ क्षेत्रपालः ॥ यमः ॥ अग्निः ॥ वायुः ॥ प्रजापतिः ॥ नक्षत्राणि ॥ कुबेरः ॥ नैऋतिः ॥ ग्रामदेवता ॥ कुलदेवता ॥ इष्टदेवः ॥ दिक्-पालः ॥ भुवनेश्वरी ॥ मेधा ॥ श्रद्धा ॥ सरस्वतीद्यावापृथिवी ॥ धन्वन्तरि ॥ धनुर्धरसत्यवस्वादयश्चेति ॥ मनुष्यवर्गः ॥ अरुंधति॥ ब्राह्मणपितरः॥ पशुवर्गः॥ सुरभिः॥ कूर्मः वाराहः ॥ नृसिंहः ॥ नंदीः ॥ गरुडः॥ पक्षीवर्गः ॥ अनंत ॥ हनुमान् ॥ मुषकः ॥ वृक्षवर्गः ॥ तुलसी ॥ बील्व ॥ दुर्वा ॥ शमी ॥ निर्गुंठी ॥ अश्वत्थः ॥ शतपत्रीका ॥ कदंब ॥ दर्भाश्चेति ॥ शब्दवर्गः॥ वेद ॥ गायत्री ॥ पुराणानि ॥ पत्रिका॥ प्रणवः ॥ नदीवर्गः ॥ गंगा ॥ यमुना ॥ कृष्णा ॥ रेवा ॥ सरस्वतीत्यादि ॥ तिथिवर्गः ॥ षष्टिपूजनं ॥ ए-

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com